पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2018-20 प्रकाशित: 01.04 स अंक का मल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

क र्य युवक परिषद् की

विशाल शिविर तैयारी बैठक

रविवार, 8 अप्रैल 2018,
दोपहर 3.00 बजे
सार्वदेशिक सभा, दयानन्द भवन,
आरिफ अली रोड़, नई दिल्ली
सभी 2.30 बजे पंहुचे
—महेन्द्र भाई, महामंत्री

वर्ष-34 अंक-21 बैशाख-2075 दयानन्दाब्द 194 01 अप्रैल से 15 अप्रैल 2018 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.04.2018, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

बहरोड़ (राजस्थान) में महर्षि दयानन्द योगधाम का भव्य उद्घाटन

राजस्थान में वेद प्रचार का केन्द्र बनेगा यह आश्रम—स्वामी आर्यवेश

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के प्रान्तीय कार्यालय का कार्य करेगा योगधाम—डा.अनिल आर्य

परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य का अभिनन्दन करते स्वामी आर्यवेश जी, शिवम मिश्रा, रामकुमार सिंह आर्य, महेन्द्र भाई व संयोजक रामकृष्ण शास्त्री। द्वितीय चित्र—योगधाम का लोकापर्ण करते स्वामी आर्यवेश जी, डा. अनिल आर्य, प्रवीन आर्या, रामकृष्ण शास्त्री व रामकुमारसिंह आर्य।

मंगलवार, 20 मार्च 2018, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् राजस्थान के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री रामकृष्ण शास्त्री के पुरूषार्थ से बहरोड़, नारनोल रोड़ पर "महर्षि दयानन्द योगधाम आश्रम" की स्थापना की गई व भव्य आश्रम का लोकापर्ण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया। समारोह के विशिष्ट अतिथि डा. अनिल आर्य ने कहा कि यह आश्रम व भव्य व्यायामशाला युवाओं के चरित्र निर्माण व उनके सर्वागींण विकास के लिये पूरे राजस्थान में कार्य करेगी। स्वामी आर्यवेश जी ने बधाई देते हुए कहा कि इस ग्रामीण क्षेत्र में वेद प्रचार केन्द्र के रूप ऐसे केन्द्र की महती आवश्यकता को यह योगधाम पूरा करेगा। सर्वश्री धर्मवीर आर्य, विरजानन्द एडवोकेट, स्वामी शरणानन्द जी, महेन्द्र भाई, रामकुमारसिंह, श्रीमती प्रवीण आर्या, प्रि. राजेन्द्रसिंह, ब्र.दीक्षेन्द्र, शिवम मिश्रा आदि सहित क्षेत्र के प्रमुख आर्य जन उपस्थित थे। व्यायामशाला में अनेकों सुन्दर मशीनों को स्थापित किया गया। कुशल संचालन श्री रामकृष्ण शास्त्री ने किया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव के 87 वें बलिदान दिवस पर आर्य समाज, सुभाष नगर दिल्ली में भव्य संगीत संध्या सम्पन्न

पूर्व महापौर सुभाष आर्य का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,संजीव आर्य आदि व द्वितीय चित्र में श्री रवि चड्डा का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,संजीव आर्य, आर.पी.तनेजा,सुरेन्द्र अरोड़ा,महेन्द्र भाई।

शुक्रवार, 23 मार्च 2018, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव के 87 वें बलिदान दिवस पर आर्य समाज,सुभाष नगर,पश्चिमी दिल्ली में श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन' व युवा गायक अंकित उपाध्याय के मधुर व ओजस्वी गीतों की एक शाम शहीदों के नाम भव्य संगीत संध्या श्री रवि चड्डा (अध्यक्ष, पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल) की अध्यक्षता में आयोजित की गई। परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने आह्वान किया कि देश की आजादी में नौजवान क्रांतिकारियों का अमूल्य योगदान रहा जिसे आज नयी पीढ़ी को बताने व समझाने की अत्यन्त आवश्यकता है। पूर्व महापौर सुभाष आर्य ने महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान की चर्चा की। समाज के प्रधान पुनीत विज, मन्त्री सिकन्दर अरोड़ा, समाजसेवी सुरेन्द्र अरोड़ा, ए.सी. भटनागर, ओमप्रकाश नागपाल, व कर्मठ कार्यकर्ता व संयोजक संजीव आर्य का प्रमुख योगदान रहा। पार्षद सुरेन्द्र सेतिया, आर्य नेता जगदीश आर्य, आर.के.दुआ, पार्षद यशपाल आर्य, मोहनीदेवी आर्या, मायाराम शास्त्री, मदनमोहन सलूजा, सुरेन्द्र बुद्दिराजा, डा. सुन्दरलाल कथूरिया, पुष्पलता वर्मा, भोपालसिंह आर्य, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, अनिल शास्त्री, वेद प्रकाश, बलदेव सचदेवा, मानवेन्द्र शास्त्री, नरेश विज, सुरेन्द्र कोछड़, अशोक आर्य, अखिलेश शर्मा, प्रकाशचन्द आर्य, प्रेम बिन्द्रा, डा.मुकेश सुधीर, हंसराज आर्य, प्रेमकांत बत्रा, उमा मोंगा, अमरनाथ बत्रा, उपेन्द्रनाथ तलवार, वेदपाल आर्य,शान्ता तनेजा, जगदीश तेत्री, वेद खट्टर, अजय खट्टर, संजय आर्य, ओमबीरसिंह आर्य, नरेश अग्रवाल आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवाया व ऋषि लंगर प्रबन्ध शिक्षक सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य, शिवम मिश्रा, वरूण आर्य, राकेश आर्य आदि आर्य युवक देख रहे थे। वेदप्रकाश आर्य, रामकुमारसिंह आर्य, देवेन्द्र भगत ने सभी का अभिनन्दन किया। ऋषि लंगर का आनन्द लेकर सभी उत्साह के साथ विदा हुए। कार्यकम को सफल बनाने में लगभग 30 आर्य समाजों की भागीदारी रही,सभी का हार्दिक आभार व धन्यवाद।

आर्यसमाज की स्थापना एवं वेद प्रचार एक दैवीय एवं पुण्य कार्य

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

हम ऋषि दयानन्द सरस्वती द्वारा चैत्र शुक्ल पंचमी संवत् 1932 को आर्यसमाज की स्थापना के कार्य को एक दैवीय एवं पुण्य कार्य मानते हैं। इसका कारण यह है कि ऋषि दयानन्द जी का यह कार्य भी हमें सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर द्वारा वेदोत्पत्ति के बाद सर्वाधिक दैवीय व पुण्य कार्य प्रतीत होता है। दैवीय कार्य यह इसलिये है कि सभी शुभ कार्य जीवात्मा की पवित्रता और ईश्वर की प्रेरणा एवं सहाय से ही सम्पन्न होते हैं। हम अपने जीवन में जो भी शुभ कार्य करते हैं उसमें हमारे माता, पिता, गुरुजनों की शिक्षा, आशीर्वाद सहित हमारे अध्ययन व हमारी आत्मा की पवित्रता सहयोगी होती हैं। इस लिए आर्यसमाज की स्थापना दैवीय कार्य है। इसलिये कि आर्यसमाज के द्वारा देश अपने वेदकालीन स्वर्णिम अतीत से परिचित होने के साथ देश की उन्नति, स्वतन्त्रता, चरित्र निर्माण, देश निर्माण, सभी को समान रूप से शास्त्रीय शिक्षा का दान व अधिकार मिलना, सामाजिक असमानता को अनुचित बताना व उसे दूर करने का संकल्प देने सहित वेदों का पुनरुद्धार व अनेकानेक कार्य आर्यसमाज के नेतृत्व में देश में हुए हैं। यदि आर्यसमाज न होता तो आज देश निश्चय ही दुर्दशा को प्राप्त होता। ऋषि दयानन्द के काल व उससे पूर्व हिन्दुओं का जो धर्मान्तरण किया जाता था, जिसमें हमारे हिन्दुओं के पण्डितों व उनकी अन्ध परम्परायें सहयोग कर रही थीं, उन पर पूर्ण विराम तो आर्यसमाज व इसके अनुयायियों ने लगाया ही, अपितु कई कई पीढ़ियों पूर्व विधर्मी बने अपने बिछुड़े बन्धुओं को भी पुनः शुद्ध करके उन्हें वृहद आर्य हिन्दू वैदिक समाज में मिलाया भी है। देश से अशिक्षा दूर करने में भी आर्यसमाज की प्रमुख व महद् भूमिका है। ऋषि के समय में वेद लुप्त प्रायः थे। वेदों के यथार्थ अर्थों का तो किसी पण्डित व धर्माचार्यों को किंचित भी ज्ञान नहीं था। ऋषि दयानन्द ने ही अपने अपूर्व पुरुषार्थ से वेदों को प्राप्त कर उनके मन्त्रों के प्राचीन ऋषियों की मान्यताओं के अनुकूल यथार्थ अर्थों व भाष्यों को हमें उपलब्ध कराया। जो वेद केवल ब्राह्मण ही पढ़ सकते थे, परन्तु पढ़ते नहीं थे, उन्हें सर्वसाधारण तक में उनके संस्कृत व हिन्दी दोनों भाषाओं में यथार्थ अर्थ करके अर्थात् पदार्थ व्याख्यां सहित उपलब्ध करा दिये। वेदों की जो बातें पण्डितों व धर्माचार्यों को ज्ञात नहीं थी, वेदों का हिन्दी में भाष्य कर ऋषि दयानन्द ने उसे साक्षर लोगों तक पूरी प्रामाणिकता के साथ उपलब्ध कराया। हम जैसे साधारण लोग भी वेदों एवं पर्याप्त वैदिक साहित्य को पढ़कर ईश्वर व जीवात्मा तथा उपासना आदि के यथार्थ स्वरूप व महत्व को समझ सके, यह सब भी ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की ही देन है।

ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के मनुष्य जाति पर इतने उपकार हैं कि उन सबको बताना व जानना कठिन है। एक उपकार यह भी है कि ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज ने देश देशान्तर के लोगों को ईश्वर के सच्चे स्वरूप का परिचय कराया और उपासना द्वारा उन्हें ईश्वर की अनुभूति करने के उपाय व साधन भी प्रस्तुत किये। मनुष्य को इससे अधिक और क्या चाहिये? उज्जवल चरित्र क्या होता है और उससे मनुष्य को जन्म जन्मान्तरों में क्या क्या लाभ होते हैं, उसे आर्यसमाज के सभी सदस्य व अनुयायी भली भांति जानते हैं। यह किसी धन–दौलत व सम्पदा से कम मूल्यवान नहीं हैं। शताधिक गुरुकुल और दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज खोलकर भी आर्यसमाज ने शिक्षा जगत में क्रान्ति की जिसके पीछे ऋषि दयानन्द जी की ही प्रेरणा थी। यह बात और है कि बाद में वह कुछ कुचक्रों में फंस गये और देश व समाज का जितना हित हो सकता था, उतना नहीं हो सका। इन सभी कारणों से हमें आर्यसमाज की स्थापना दैवीय या ईश्वरीय कार्य ही प्रतीत होता वा सिद्ध होता है। जो भी दैवीय कार्य होता है वह पुण्य कार्य ही होता है। इस आधार पर आर्यसमाज की स्थापना एक अतीव पुण्य कार्य है। संक्षेप में यह भी कह सकते हैं कि महर्षि दयानन्द ने न केवल भारतीयों अपितु विश्व के प्रत्येक व्यक्ति के लिए मोक्ष का मार्ग जो सदियों से बन्द पड़ा था, उसे सबके लिए खोल दिया और उनके इस कार्य से देश विदेश के कई लोग परमधाम की यात्रा पर अग्रसर हुए व कुछ ने परमधाम मोक्ष के लक्ष्य को प्राप्त भी किया।

आर्यसमाज के अनेक कार्यों में से एक कार्य धार्मिक व सामाजिक अन्धविश्वासों, मिथ्या परम्पराओं एवं रूढ़ियों का खण्डन व उन पर प्रहार करना था। ऐसा इसलिए आवश्यक था कि इनके कारण वैदिक धर्म व संस्कृति विनाशोन्मुख होकर इतिहास में घटती घटती समाप्ति की ओर बढ़ रही थी। इसको सबसे अधिक हानि पुराणों के अतार्किक सिद्धान्तों व मान्यताओं, बौद्ध, जैन, ईसाई व इस्लाम मत ने पहुंचाई थी। सिख मत नाम से इसके बहुत से बन्धु इससे पृथक हो गये थे। इनमें से ईसाई व इस्लाम मत ऐसे थे जो वैदिक धर्म अर्थात् सनातन धर्म के बन्धुओं का इसके अन्धविश्वासों, मिथ्या परम्पराओं व रूढ़ियों के कारण उपहास करते हुए इसके अनुयायियों को लोभ व छल कपट सहित भय आदि के द्वारा धर्मान्तरण करते थे। यदि ऋषि दयानन्द ऐसा न करते तो आज वैदिक मत की जो दुर्दशा होती उसका हम अनुमान भी नहीं कर सकते। ऋषि दयानन्द ने सनातन वैदिक धर्म में उत्पन्न व प्रचलित अन्धविश्वासों के अर्न्तगत मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, जन्मना जातिवाद, बाल विवाह, विधवाओं की दुर्दशा, अनमेल विवाह, बहुपत्नी प्रथा, विभिन्न जातियों व समुदायों में परम्पराओं के नाम पर भेदभाव का जोरदार खण्डन किया। इसका विकल्प भी उन्होंने वेद व वेदभाष्य, वैदिक साहित्य के अन्तर्गत दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार विधि आदि देकर व धर्म व समाज विषयक तर्क व युक्तिप्रधान मान्यताओं का प्रचार करके किया। उनके प्रचार का प्रभाव हुआ। पठित समाज उनके प्रचार से प्रभावित होकर उनके सिद्धान्तों को अपनाने लगा। धीरे धीरे आर्य धर्म पर विश्वास करने वाले धर्मप्रेमी बन्धुओं की संख्या बढ़ने लगी।

स्वामी जी ने एक प्रमुख व महत्वपूर्ण कार्य आर्यसमाज की स्थापना कर व उसे प्रजातान्त्रिक स्वरूप प्रदान करके किया। आर्यसमाज का मुख्य सिद्धान्त है वेद और वेदानुकूल मान्यताओं जो तर्क व युक्ति के अनुकूल, ज्ञान विज्ञान सम्मत तथा मनुष्य व समाज के लिए हितकर हैं, उन्हें स्वीकार करना और इसके विपरीत वैदिक व इतर साहित्य में जो भी लिखा गया, कहा गया या जो प्रचलित हुआ, उसे अस्वीकार किया। ऋषि दयानन्द ने वैदिक वा नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा जिसमें संस्कृत व हिन्दी को प्रमुख स्थान प्राप्त हो, का प्रचार किया। इतना ही नही, ऋषि दयानन्द ने अपनी मान्यताओं का खुल कर प्रचार किया। उन्होंने दूसरे मत–मतान्तरों की तरह अपने मत की बातों को गुप्त व छिपा कर नहीं रखा। स्वामी दयानन्द जी ने अन्य मतों के आचार्यों को शास्त्रार्थ, वार्तालाप आदि की चुनौती दी। उन्होंने प्रायः सभी मतों के आचार्यों से शास्त्रार्थ किये और वेदों की मान्यताओं को सत्य व प्रामाणिक सिद्ध किया। सभी मतों में अविद्या व अज्ञान की बातें भरी हुई हैं, इसका प्रकाश व यथार्थ तथ्यों का अनावरण भी उन्होंने किया। वीर विनायक दामोदर सावरकर जी ने सत्य ही लिखा है कि जब तक ऋषि दयानन्द जी का सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ विद्यमान है, संसार का कोई भी मत, सम्प्रदाय व तथाकथित धर्म आदि अपने अपने मत की शेखी नहीं बघार सकते।

आज संसार में वेदमत को चुनौती देने वाला कोई नहीं है। सभी मतों के ग्रन्थों में सृष्टि उत्पत्ति व पालन आदि की जो मान्यतायें हैं वह अज्ञानपूर्ण सिद्ध हुई हैं। ऋषि ने सत्यार्थप्रकाश के 11 से 14 तक के समुल्लास में इस पर प्रकाश डाला है। इसके विपरीत ऋषि ने वेद के आधार पर तर्क देकर ईश्वर, जीव व प्रकृति को अनादि तत्व सिद्ध किया है। ईश्वर पूर्व कल्पों के अनुसार अपनी सर्वज्ञता व सर्वशक्तिमतता से यथापूर्व सृष्टि की उत्पत्ति व पालन करते हैं। दर्शन के अनुसार मूल सत्व, रज व तमों गुणों वाली प्रकृति का प्रथम विकार महत्तत्व होता है, उसके बाद अहंकार, इससे भिन्न भिन्न पांच सूक्ष्मभूत यथा श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा, घ्राण पांच ज्ञानेन्द्रियां और पांच कर्मेन्द्रियां यथा वाक, हस्त, पाद, उपस्थ और गुदा और ग्यारहवां मन, कुछ स्थूल, उत्पन्न होते हैं। पांच तन्मात्राओं से अनेक स्थूलावस्थाओं को प्राप्त होते हुए क्रम से पांच स्थूल भूत, पृथिवी, अग्नि, जल, वायु और आकाश, जिन को लोग प्रत्यक्ष देखते हैं उत्पन्न होते हैं। उन से नाना प्रकार की ओषधियां, वृक्ष आदि, उन से अन्न, अन्न से वीर्य और वीर्य से शरीर उत्पन्न होता है। यह ज्ञान की बातें भी वैदिक साहित्य व विचारें की देन है जिसमें बताया गया है कि आदि सृष्टि मैथुनी नहीं होती अपितु अमैथुनी होती है। परमात्मा आदि सृष्टि में अमैथुनी सृष्टि कर स्त्री व पुरुषों के शरीर बनाकर उन में जीवों का संयोग कर देते हैं तदन्तर मैथुनी सृष्टि चलती है। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण व ज्ञानवर्धक विचार व रहस्य की बातें ऋषि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में बताई हैं। संसार के किसी मत में यह ज्ञान व विज्ञान उपलब्ध नहीं होता है। इससे भी वेदमत की सर्वोपरि महत्ता सिद्ध है।

स्वामी दयानन्द जी की मनुष्य जाति को अनेक देन हैं। ईश्वरोपासना का स्वरूप व यथार्थ विधि प्रदान कर भी उन्होंने इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान किया है। स्वामी दयानन्द जी ने यज्ञ व अग्निहोत्र विज्ञान व उससे होने वाले लाभों को मनुष्यों को समझाया। वेदों व वेदाधारित साहित्य में विमान की चर्चा से भी देश को परिचित कराया। यह उल्लेख तब किये जब कि विश्व में कहीं विमान का विचार नहीं किया गया था। आयुर्वेद के चरक, सुश्रुत, धनवन्तरि आदि ऋषियों के ग्रन्थों, ज्योतिष के प्रमुख ग्रन्थ सूर्य सिद्धान्त से भी उन्होंने हमें परिचित कराया। ब्रह्मचर्य की महत्ता को उनके समय का देश व समाज विस्मृत कर चुका था, उसका भी ज्ञान कराया। मनुष्य जीवन का उद्देश्य वैदिक साधनों से मुक्ति प्राप्त करना है जिससे मनुष्य की आत्मा जन्म व मरण के बन्धनों से मुक्त होकर पूर्ण आनन्द को प्राप्त होती है, इसका युक्तिसंगत ज्ञान भी हमें ऋषि दयानन्द ने ही कराया है। इसके साथ परोपकार व दान का जीवन में क्या महत्व है और इससे हमारा वर्तमान व मृत्योतर जीवन कैसे प्रभावित व लाभान्वित होता है, इसका ज्ञान भी हमें दयानन्द जी ने कराया है। महाभारत काल के बाद के पांच हजार वर्षों तक हम इन समस्त लाभप्रद बातों से दूर रहे और दुर्दशा को प्राप्त हुए। ऋषि दयानन्द ने उस धारा को बन्द कर ज्ञानधारा प्रवाहित कर देश की उन्नति व स्वतनत्रता की नीवं को पुख्ता किया। इस कारण से हम ऋषि दयानन्द के आविर्भाव व उनके कार्य आर्यसमाज की स्थापना आदि को दैवीय व पुण्य कार्य अनुभव करते हैं। ऋषि दयानन्द ने अनेक विषयों पर मौलिक व देश के लिए उपयोगी विचार प्रस्तुत कर वैदिक धर्म को संसार का सर्वश्रेष्ठ धर्म सिद्ध किया है। आर्यसमाज के चैत्र शुक्ल पंचमी तदनुसार इस वर्ष 22 मार्च, 2018 को स्थापना दिवस के अवसर पर हम ऋषि दयानन्द को स्मरण कर उन्हें नमन करते हैं।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

गुरूकुल खेडाखुर्द दिल्ली का उत्सव

गुरूकुल खेडाखुर्द दिल्ली–110082 का वार्षिकोत्सव रविवार, 8 अप्रैल 2018 को प्रातः 8 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक सोल्लास मनाया जायेगा। इससे पूर्व 29 मार्च से 7 अप्रैल 2018 तक प्रातः 7 से 9 व सायं 5 से 7 बजे तक यज्ञ होगा। आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

–ब्रह्मप्रकाश मान, प्रधान –मनोज मान,मन्त्री –आचार्य सुधांशु, प्राचार्य

शोक समाचारः विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्री होमेन्द्र अरोड़ा (भ्राता श्री योगराज अरोड़ा, सैनिक फार्मस) का निधन।
2. श्री जगदीश बधवा (दामाद श्री कृष्णदेव आर्य, सरस्वती विहार) का निधन।
3. चौ.राजपाल आर्य (आर्य समाज, सैक्टर-6, करनाल) का निधन।
4. श्री मनीष कक्कड़ (दामाद श्री एस.एन.डंग,भाजपा,दिल्ली) का निधन।
5. श्रीमती वीरांदेवी (माता डा.राजेन्द्रपाल शर्मा,नवीन शाहदरा) का निधन।
6. पं.राधेश्याम शर्मा (प्रवीन शर्मा, नवीन शाहदरा के ताया जी) का निधन।

शिक्षाविद् डा.अशोक कुमार चौहान व माता पुष्पा भाटिया के सान्निध्य में

दिल्ली में राष्ट्रीय आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के तत्वावधान में "राष्ट्रीय आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर" शनिवार, 9 जून से रविवार, 17 जून 2018 तक दयानन्द मॉडल स्कूल,विवेक विहार,पूर्वी दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है । कक्षा 6 से 12 वीं तक के युवक शिविर में भाग ले सकेंगे । इच्छुक युवक 200/–रु0 प्रवेश शुल्क के साथ अपना स्थान शीघ्र आरक्षित करवा लें,केवल 250 युवक पहले आओ पहले पाओ के आधार पर लिए जायेंगे । सभी शिविरार्थी शनिवार, 9 जून 2018 को दोपहर 12 बजे शिविर स्थल पर रिपोर्ट करेंगे ।

शिविर उद्घाटन समारोह शनिवार, 9 जून को सायं 5 बजे से रात्री 7 बजे तक होगा व शिविर समापन रविवार, 17 जून 2018 को सायं 5 बजे से रात्री 7. 30 बजे तक होगा । सभी आर्य बन्धुओं से अपील है कि "उदघाटन व समापन" के अवसर पर हजारों की संख्या में पंहुच कर युवा शक्ति को अपना आशीर्वाद प्रदान करें। दानी महानुभावों से अपील है कि निरन्तर चलने वाले "ऋषि लंगर" के लिये आटा,दाल,चावल,सब्जी,चीनी,मसालें,दूध,रिफाईण्ड,घी आदि से सहयोग करने की कृपा करें । समस्त क्रास चैक/ड्राफट "केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली" के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवाने की कृपा करें ।

सम्पर्क सूत्रः सौरभ गुप्ता–9971467978, अरूण आर्य–9818530543, शिवम मिश्रा–9958125334

निवेदक

आनन्द चौहान	प्रवीन भाटिया	डा.अनिल आर्य	यशोवीर आर्य/रामकुमार आर्य	महेन्द्र भाई
शिविर संरक्षक	स्वागताध्यक्ष	शिविर अध्यक्ष	सहसंयोजक	शिविर संयोजक

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के आगामी शिविर

1. दिल्ली आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर, दिनांक 20 मई से 27 मई 2018 तक, स्थानः गीता भारती पब्लिक स्कूल, अशोक विहार, फेज–2, दिल्ली, सम्पर्कः– उर्मिला आर्याः 9711161843, अर्चना पुष्करनाः 9899555280.
2. राष्ट्रीय शिक्षक अभ्यास शिविर, दिनांक 13 अप्रैल से 15 अप्रैल 2018 तक, गुरूकुल खेड़ाखुर्द, दिल्ली–110082, सम्पर्कः सौरभ गुप्ता, संयोजक, 9971467978
3. जयपुर आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर, दिनांक 1 मई से 6 मई 2018 तक, स्थानः जी.एल. सैनी नर्सिंग कालेज, जयपुर, राजस्थान।
4. इन्दौर युवक चरित्र निर्माण शिविर, दिनांक 20 मई से 27 मई 2018 तक, आर्य समाज, संचार नगर, इन्दौर, मध्य प्रदेश. सम्पर्कः आचार्य भानुप्रताप वेदालंकारः 9911987777
5. गढ़वाल योग साधना शिविर, दिनांक 1 जून से 7 जून 2018, स्थानः गुरूकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल, उतराखण्ड, सम्पर्कः ब्र. विश्वपाल जयन्तः 9837162511
6. राजस्थान प्रान्तीय युवक शिविर, दिनांक 4 जून से 10 जून 2018 तक, डी. वी. एम. पब्लिक स्कूल, बहरोड़, राजस्थान, सम्पर्कः रामकृष्ण शास्त्रीः 9887669603
7. जयपुर युवक निर्माण शिविर, दिनांक 18 जून से 25 जून 2018 तक, जी. एल. सैनी, नर्सिग कालेज, जयपुर, राजस्थान. सम्पर्कः यशपाल यशः 9414360248
8. जम्मू युवक निर्माण शिविर, दिनांक 18 जून से 25 जून 2018 तक, आर्य समाज, जानीपुर, जम्मू, सम्पर्कः सुभाष बब्बर– 9419301915
9. उड़ीसा निर्माण शिविर दिनांक 5 मई से 11 मई 2018 तक गुरुकुल संस्कृत विद्यालय, राउरकेला–4, ओडिशा, सम्पर्कः पं. धनेश्वर बेहरा, प्रान्तीय अध्यक्ष–9438441227

आओ, तपोवन देहरादून का वार्षिक यज्ञ

वैदिक भक्ति आश्रम, तपोवन, देहरादून का वार्षिक यज्ञ दिनांक 9 मई से 13 मई 2018 तक चलेगा। दिल्ली से जाने वाले आर्य बन्धुओं के लिये शुक्रवार, 11 मई 2018 को रात्री 10 बजे दो ए.सी. बसों की व्यवस्था रहेगी जिसका किराया प्रति सीट 600/– रू रहेगा। बसें 12 मई प्रातः 6 बजे हरिद्वार पंहुचेगी, भ्रमण–स्नान आदि से निवृत होकर दोपहर बाद तपोवन आयेंगी और रविवार, 13 मई 2018 को पूर्णाहूति व स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस सम्पन्न करके दोपहर 2 बजे वापिस दिल्ली के लिये प्रस्थान करेंगी व रात्री दिल्ली पंहुचेगी। यदि एक बस की सवारी सीधा तपोवन ही जाना चाहेगी तो वैसी व्यवस्था कर दी जायेगी। सम्पर्क सूत्रः 9971467978, 9911404423, 9818530543

शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव के 87 वें बलिदान दिवस पर कृतज्ञ राष्ट्र का नमन

श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन' का अभिनन्दन करते प्रधान पुनीत विज, सुरेन्द्र अरोड़ा, ओमप्रकाश नागपाल,संजीव आर्य व डा. अनिल आर्य व द्वितीय चित्र में उपस्थित आर्य जन समूह।

जम्मू कश्मीर सरकार ने आर्य समाज के लिये 11 लाख रू दिये व न्यू जान एफ कैनेडी स्कूल का उत्सव सम्पन्न

जम्मू कश्मीर सरकार की ओर से विधायक श्री सत शर्मा ने केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् जम्मू कश्मीर को आर्य समाज,जानीपुर,जम्मू के तीसरी मंजिल के सभागार निर्माण हेतु 11 लाख 90 हजार रू. प्रदान किये, जिससे भवन निर्माण का कार्य तेजी से चल रहा है। आर्य समाज के प्रधान श्री सुभाष बब्बर,मंत्री श्री रमेश खजूरिया व पं.वेदांशु शास्त्री विधायक श्री सत शर्मा का आभार व्यक्त करते हैं। द्वितीय चित्र–रविवार, 25 मार्च 2018,न्यू जान एफ कैनेडी पब्लिक स्कूल,पल्ला,फरीदाबाद का वार्षिक उत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। चित्र में–विशिष्ट अतिथि डा.अनिल आर्य,प्रधान श्री दासराम आर्य,सचिव सत्यभूषण आर्य गणमान्य जनों के साथ। विद्यालय के प्रबन्धक विद्याभूषण आर्य ने कुशल संचालन किया।

पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2018-20 प्रकाशित: 01.04 स अंक का मल्य 2 रुपये

।। ओ३म् ।।

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

के [illegible] युवक परिषद् की
विशाल शिविर तैयारी बैठक
रविवार, 8 अप्रैल 2018,
दोपहर 3.00 बजे
सार्वदेशिक सभा, दयानन्द भवन,
आ.रिफ [illegible] रोड़, नई दिल्ली
सभी [illegible] 2.30 बजे पंहुचे
—महे[illegible] भाई,महामंत्री

वर्ष-34 अंक-21 बैशाख-2075 दयानन्दाब्द 194 01 अप्रैल से 15 अप्रैल 2018 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.04.2018, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

बहरोड़ (राजस्थान) में महर्षि दयानन्द योगधाम का भव्य उद्घाटन

राजस्थान में वेद प्रचार का केन्द्र बनेगा यह आश्रम—स्वामी आर्यवेश
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के प्रान्तीय कार्यालय का कार्य करेगा योगधाम—डा.अनिल आर्य

परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य का अभिनन्दन करते स्वामी आर्यवेश जी, शिवम मिश्रा, रामकुमार सिंह आर्य, महेन्द्र भाई व संयोजक रामकृष्ण शास्त्री। द्वितीय चित्र—योगधाम का लोकापर्ण करते स्वामी आर्यवेश जी, डा. अनिल आर्य, प्रवीन आर्या, रामकृष्ण शास्त्री व रामकुमारसिंह आर्य।

मंगलवार, 20 मार्च 2018, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् राजस्थान के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री रामकृष्ण शास्त्री के पुरूषार्थ से बहरोड़, नारनोल रोड़ पर "महर्षि दयानन्द योगधाम आश्रम" की स्थापना की गई व भव्य आश्रम का लोकापर्ण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया। समारोह के विशिष्ट अतिथि डा. अनिल आर्य ने कहा कि यह आश्रम व भव्य व्यायामशाला युवाओं के चरित्र निर्माण व उनके सर्वागींण विकास के लिये पूरे राजस्थान में कार्य करेगी। स्वामी आर्यवेश जी ने बधाई देते हुए कहा कि इस ग्रामीण क्षेत्र में वेद प्रचार केन्द्र के रूप ऐसे केन्द्र की महती आवश्यकता को यह योगधाम पूरा करेगा। सर्वश्री धर्मवीर आर्य, विरजानन्द एडवोकेट, स्वामी शरणानन्द जी, महेन्द्र भाई, रामकुमारसिंह, श्रीमती प्रवीण आर्या, प्रि. राजेन्द्रसिंह, ब्र.दीक्षेन्द्र, शिवम मिश्रा आदि सहित क्षेत्र के प्रमुख आर्य जन उपस्थित थे। व्यायामशाला में अनेकों सुन्दर मशीनों को स्थापित किया गया। कुशल संचालन श्री रामकृष्ण शास्त्री ने किया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव के 87 वें बलिदान दिवस पर आर्य समाज, सुभाष नगर दिल्ली में भव्य संगीत संध्या सम्पन्न

पूर्व महापौर सुभाष आर्य का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,संजीव आर्य आदि व द्वितीय चित्र में श्री रवि चड्डा का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,संजीव आर्य, आर.पी.तनेजा,सुरेन्द्र अरोड़ा,महेन्द्र भाई।

शुक्रवार, 23 मार्च 2018, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव के 87 वें बलिदान दिवस पर आर्य समाज,सुभाष नगर,पश्चिमी दिल्ली में श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन' व युवा गायक अंकित उपाध्याय के मधुर व ओजस्वी गीतों की एक शाम शहीदों के नाम भव्य संगीत संध्या श्री रवि चड्डा (अध्यक्ष, पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल) की अध्यक्षता में आयोजित की गई। परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने आह्वान किया कि देश की आजादी में नौजवान क्रांतिकारियों का अमूल्य योगदान रहा जिसे आज नयी पीढ़ी को बताने व समझाने की अत्यन्त आवश्यकता है। पूर्व महापौर सुभाष आर्य ने महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान की चर्चा की। समाज के प्रधान पुनीत विज, मन्त्री सिकन्दर अरोड़ा, समाजसेवी सुरेन्द्र अरोड़ा, ए.सी. भटनागर, ओमप्रकाश नागपाल, व कर्मठ कार्यकर्ता व संयोजक संजीव आर्य का प्रमुख योगदान रहा। पार्षद सुरेन्द्र सेतिया, आर्य नेता जगदीश आर्य, आर.के.दुआ, पार्षद यशपाल आर्य, मोहनीदेवी आर्या, मायाराम शास्त्री, मदनमोहन सलूजा, सुरेन्द्र बुद्धिराजा, डा. सुन्दरलाल कथूरिया, पुष्पलता वर्मा, भोपालसिंह आर्य, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, अनिल शास्त्री, वेद प्रकाश, बलदेव सचदेवा, मानवेन्द्र शास्त्री, नरेश विज, सुरेन्द्र कोछड़, अशोक आर्य, अखिलेश शर्मा, प्रकाशचन्द आर्य, प्रेम बिन्द्रा, डा.मुकेश सुधीर, हंसराज आर्य, प्रेमकांत बत्रा, उमा मोंगा, अमरनाथ बत्रा, उपेन्द्रनाथ तलवार, वेदपाल आर्य,शान्ता तनेजा, जगदीश तेत्री, वेद खट्टर, अजय खट्टर, संजय आर्य, ओमबीरसिंह आर्य, नरेश अग्रवाल आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवाया व ऋषि लंगर प्रबन्ध शिक्षक सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य, शिवम मिश्रा, वरूण आर्य, राकेश आर्य आदि आर्य युवक देख रहे थे। वेदप्रकाश आर्य, रामकुमारसिंह आर्य, देवेन्द्र भगत ने सभी का अभिनन्दन किया। ऋषि लंगर का आनन्द लेकर सभी उत्साह के साथ विदा हुए। कार्यक्रम को सफल बनाने में लगभग 30 आर्य समाजों की भागीदारी रही,सभी का हार्दिक आभार व धन्यवाद।